गांधी जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में
माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया का संबोधन

दिनांक 2 अक्टूबर 2023, बुधवार	**समय : 11.00 AM**	**स्थान : शरणिया, उलुबाड़ी**

नमस्कार।

सर्वप्रथम आप सभी को गांधी जयंती की हार्दिक बधाई।

आज गांधी जयंती के शुभ अवसर पर हम सभी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि देने के लिए एकत्र हुए हैं। गांधी जयंती सिर्फ उत्सव का दिन नहीं, बल्कि चिंतन का दिन है। यह हमें गांधी जी के सिद्धांतों की याद दिलाता है। गांधी जी का शांति, अहिंसा, करुणा और सत्य के प्रति अटूट विश्वास था। सत्य और अहिंसा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता ने दुनिया भर में मौलिक अधिकारों और स्वतंत्रता के लिए आंदोलनों को प्रेरित किया। उन्होंने ब्रिटिश शासन से भारत की आजादी के लिए लड़ने के लिए अहिंसा का इस्तेमाल किया।

गांधीजी ने अपने पूरे जीवन में कई महान कार्य किए, जो आज भी लोगों को प्रेरित करते हैं। उन्होंने स्वराज, अस्पृश्यता के खिलाफ, महिलाओं के अधिकारों और किसानों की आर्थिक भलाई के लिए अथक प्रयास किया। उनके समर्पण और संघर्ष के कारण भारत को 200 वर्षों के ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से आजादी मिली।

मित्रों,

गांधी जी के पास अद्भुत नेतृत्व क्षमता थी। उनके विचारों ने भारत के देशभक्तों की दो पीढ़ियों को प्रेरित किया। उन्होंने अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व व विचारों से स्वतंत्रता आंदोलन को जबरदस्त धार दी। "सादा जीवन उच्च विचार" के सिद्धांत पर चलने वाले गांधी जी समाज में फैली बुराइयों जैसे छुआछूत, शराब, जातीय भेदभाव, असमानता, महिलाओं के साथ भेदभाव के भी घोर विरोधी थी। उन्होंने सिर्फ आजादी की ही लड़ाई नहीं लड़ी, बल्कि समाज में दलितों की स्थिति बेहतर करने व उन्हें बराबरी का हक दिलाने के लिए भी लड़ाई लड़ी। बापू ने हरिजन आंदोलन शुरु किया। उन्होंने दलित वर्ग के लोगों को हरिजन नाम दिया और कहा कि वह भगवान की संतान है।

महात्मा गांधी भारत के सबसे बड़े स्वतंत्रता सेनानी थे। गांधी जी के बलिदान और उनके अतुलनीय कार्य के लिए उन्हें राष्ट्रपिता का ओहदा दिया गया है। उनके अहिंसा के सिद्धांत को पूरी दुनिया ने सलाम किया, यही वजह है कि पूरा विश्व आज का दिन अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के तौर पर भी मनाता है। गांधीजी की महानता, उनके कार्यों व विचारों के कारण ही 2 अक्टूबर को स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस की तरह राष्ट्रीय पर्व का दर्जा दिया गया है।

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान गांधी जी देश के लिए मजबूत इरादों के साथ खड़े थे। लेकिन हर मजबूत व्यक्ति को किसी न किसी सहारे की जरूरत होती है। कोई था जो उनका सहारा बना। वह सहारा था उनकी धर्मपत्नी स्व. कस्तूरबा गांधी जी। यह वही नाम है, जो गांधी के सत्याग्रह, समर्पण और त्याग में बराबर का सहभागी बनी। उनके हर कदम का साथी बनी। तर्क-वितर्क किया, लेकिन हर फैसले को स्वीकार किया। कस्तूरबा जी ग्रामीण जीवन के प्रति समर्पित एक साधारण महिला थीं, जो गांवों में रहकर सेवा करती थीं।

मोहनदास करमचंद गांधी के "महात्मा गांधी", "राष्ट्रपिता" और "बापू" बनने के पीछे उनके त्याग का अहम योगदान था। अगर वे न होती तो आज गांधी जी "महात्मा" न होते। कस्तूरबा गांधी को प्यार से "बा" कहा जाता था। उनकी स्मृति को संरक्षित करने और राष्ट्र के प्रति प्रेम और सम्मान को अमर बनाने के लिए एक ऐसी संस्था बनाना का निर्णय लिया गया, जो ग्रामीण भारत के विकास के लिए काम करे। इस उद्देश्य से 1945 में कस्तूरबा गांधी नेशनल मेमोरियल ट्रस्ट का गठन किया गया।

गांधीजी 9 जनवरी, 1946 को जब असम आए तब गुवाहाटी के सरणीया में इस ट्रस्ट की असम शाखा की नींव रखी गई।

मुझे खुशी है कि यह ट्रस्ट आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के दिलों में निडरता, दृढ़ संकल्प और आत्मनिर्भरता की भावना पैदा करने का काम करता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह ट्रस्ट भविष्य में भी अपने लक्ष्यों और उद्देश्यों के लिए सक्रियता और समर्पण के साथ काम करता रहेगा।

बापू के विचार हमेशा से न सिर्फ भारत, बल्कि पूरे विश्व का मार्गदर्शन करते आए हैं और आगे भी करते रहेंगे। अपने और समाज के भीतर बदलाव लाकर ही हम शांतिपूर्ण व न्यायपूर्ण समाज का निर्माण कर पाएंगे। हमें गांधीजी के संदेशों को समझकर, उसका अर्थ जानकर अनुसरण करना चाहिए। गांधी दर्शन भारत और वैश्विक समस्याओं के हल में काफी प्रासंगिक है और भविष्य में भी रहेगा।

गांधी जयंती के पावन अवसर पर, आइए हम उनके द्वारा पोषित मूल्यों को बनाए रखने का संकल्प लें और एक ऐसे भारत की निर्माण के लिए काम करें, जहां न्याय, समानता और अहिंसा कायम हो।

धन्यवाद

जय हिन्द